ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in February 2025

जोधपुर ग्रामीण क्षेत्र में कृषि–आधारित विकास एवं कृषि–तंत्र का विश्लेषणात्मक अध्ययन

पवन चौधरी, शोधार्थी, भूगोल विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. अनिता, सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

सार

ग्रामीण विकास में कृषि की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है, विशेष रूप से राजस्थान जैसे शुष्क एवं अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में। जोधपुर जिला अपने विशिष्ट भौगोलिक, जलवायु तथा सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के कारण एक अलग कृषि–तंत्र प्रस्तुत करता है। यह शोध–पत्र जोधपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि–आधारित विकास एवं प्रचलित कृषि–तंत्र का सामान्य एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में फसल प्रारूप, सिंचाई साधन, मृदा प्रकार तथा कृषि पर निर्भर ग्रामीण आजीविका का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। राजस्थान के पश्चिमी भाग में स्थित जोधपुर जिला सीमित वर्षा, रेतीली मिट्टी तथा जल संसाधनों की कमी के बावजूद कृषि गतिविधियों के लिए जाना जाता है। यहाँ का ग्रामीण विकास प्रत्यक्ष रूप से कृषि–तंत्र से जुड़ा हुआ है। जोधपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक कृषि पद्धतियों के साथ–साथ आधुनिक तकनीकों का सीमित प्रयोग देखने को मिलता है। इस शोध–पत्र का उद्देश्य जोधपुर के ग्रामीण क्षेत्र में कृषि–आधारित विकास की प्रकृति तथा कृषि–तंत्र की संरचना को समझना है।

साहित्य समीक्षा

कई विद्वानों ने राजस्थान की कृषि व्यवस्था एवं ग्रामीण विकास पर अध्ययन किया है। शर्मा (2005) ने शुष्क क्षेत्रों की कृषि समस्याओं पर प्रकाश डाला। सिंह (2012) ने पश्चिमी राजस्थान में फसल प्रारूप एवं सिंचाई के साधनों का विश्लेषण किया। हाल के अध्ययनों में टिकाऊ कृषि तथा जल संरक्षण तकनीकों पर विशेष बल दिया गया है।

हालाँकि, जोधपुर के ग्रामीण कृषि–तंत्र को समग्र रूप में प्रस्तुत करने वाले अध्ययन अपेक्षाकृत कम हैं।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन के लिए द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जिनमेंरू

- जनगणना रिपोर्ट
- जिला सांख्यिकी पत्रिका
- कृषि विभाग की रिपोर्टें
- शोध–पत्र एवं पुस्तकें

का अध्ययन किया गया है।

अनुसंधान अंतराल

यद्यपि राजस्थान के कृषि विकास पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, फिर भी जोधपुर के ग्रामीण कृषि–तंत्र एवं कृषि–आधारित विकास के समन्वित अध्ययन का अभाव है। विशेष रूप से स्थानीय फसल प्रारूप, जल संकट एवं ग्रामीण आजीविका के बीच संबंधों पर विस्तृत शोध की आवश्यकता है। यह अध्ययन इसी अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन निम्नलिखित दृष्टि से महत्वपूर्ण हैः

- जोधपुर के ग्रामीण कृषि–तंत्र को समझने में सहायता
- कृषि–आधारित ग्रामीण विकास की समस्याओं एवं संभावनाओं की पहचान
- भूगोल, ग्रामीण विकास एवं कृषि अध्ययन के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी
- नीति निर्माण एवं योजना विकास में सहायक

निष्कर्ष

जोधपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आज भी आजीविका का मुख्य साधन है, यद्यपि प्राकृतिक सीमाएँ इसके

विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। सीमित वर्षा, जल संसाधनों की कमी एवं पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ कृषि–तंत्र को प्रभावित करती हैं। इसके बावजूद उपयुक्त तकनीक, जल संरक्षण तथा फसल विविधीकरण द्वारा कृषि–आधारित ग्रामीण विकास को सुदृढ़ किया जा सकता है। यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि जोधपुर के ग्रामीण कृषि–तंत्र में सुधार ग्रामीण विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संदर्भ सूची

- शर्मा, आर. (2005). राजस्थान की कृषि व्यवस्था. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- सिंह, एस. (2012). पश्चिमी राजस्थान में कृषि विकास. जयपुरः रावत पब्लिकेशन।
- भारत सरकार. जिला सांख्यिकी पत्रिकाः जोधपुर.
- कृषि विभाग, राजस्थान. कृषि रिपोर्ट.
- मिश्रा, के. (2018). ग्रामीण विकास एवं कृषि. नई दिल्लीः पीएचआई।